भारतीय इतिहास के साधन

"ब्राह्मण ग्रंथ"

(1) ऋग्वेद– 'ऋक' का अर्थ होता है। 1028 सुक्त छंदो और चरणों से युक्त मंत्र–ऋचा–ऋक कर बहुवचन।

सम्भवतः भारत वर्ष में प्रवेश के पूर्व ही आर्यजन ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं की रचना कर चुके थे।

छंद– छंदो की संख्या 21 मानी जाती है।

खिल्य– ऋग्वेद में जुड़े परिशिष्टों को खिल्य कहते थे।

विनियोग– जिस विशेष कार्य के लिए सुक्तों का प्रयोग किया जाता था। उसे विनियोग कहते है।

सुक्त (1028)– प्रत्येक सुक्त में उस ऋषि का नाम अथवा गोत्र होता है जिसने उसकी रचना की थी।

(2) सामवेद– साम+वेद = 'साम' का अर्थ होता है– गान

उदगाता – सामवेद के गायक को उदगाता कहते है।

(3) यजुर्वेद– यजु' का अर्थ होता है– यज्ञ– यह मूलतः यज्ञ प्रधान वेद है। यह 5 शाखाओं में विभक्त है।

1. कृष्णा यजुर्वेद–

- काठक
- कयिष्ठक
- मैत्रायणी
- तैत्तरीय
- वाजस वेदी
- शुक्ल यजुर्वेद

ऋग्वेद के मंत्रो से यज्ञ करते हुए या होतृ देवताओं का आहवाहन करने वाले व्यक्ति को होता कहते थे।

यजुर्वेद + कर्मकाण्ड प्रधान वेद है।(पद्य एवं गद्य में लिखित)

(4) अथर्ववेद– रचना अथर्वा ऋषि अथर्वेद में आर्य तथा अनार्य विचारधाराओं का समन्वय मिलता है।

"ब्राह्मण ग्रंथ"

ब्रह्म– का अर्थ है यज्ञ– यज्ञ के विषयों का प्रतिपादन करने वाले ग्रंथ ब्राह्मण कहलाये। इनकी रचना यज्ञ तथा कर्मकांड के जटिल स्वरूप को समझाने के लिए की गयी थी। अधिकांशतः ब्राह्मण ग्रंथ– गद्य में मिलते है परन्तु कहीं कहीं पद्य में भी मिलता है।

"आरण्यक"– गुप्त व जोखिम भरे क्रिया कलाप आरण्यकोक में कोरे यज्ञवाद के स्थान पर चिंतनशील ज्ञान के पक्ष को अधिक महत्व दिया गया है।
आरण्यकों की संख्या– इस समय 7 आरण्यकों की संख्या उपलब्ध है।

1. ऐतरेय आरण्यक
2. शांखायन आरण्यक
3. तैत्तरीय आरण्यक
4. मैत्रायणी आरण्यक
5. याध्यन्दिन आरण्यक
6. तलबकार आरण्यक

उपनिषद– उपनिषद आरण्यक की टीका है। आरण्यक के बाद उपनिषदों का नम्बर आता है। उपनिषदों को ब्रह्मविधा तथा वेदांत भी कहा है। संख्या 12 है।

वेदांग– ये 6 प्रकार के होते है।

1. शिक्षा
2. कल्प
3. व्याकरण
4. निरूक्त
5. छंद
6. ज्योतिष

(1) कल्पसूत्र– कल्प का अर्थ "विधि नियम" होता है। इसके तीन भाग है।

1. श्रौतसूत्र– सके तहत सुल्बसूत्र भी आता है।
2. गृहयसूत्र– सूत्रकार्क 600–300 BC
3. धर्मसूत्र– ऋतिकाल 300 BC से अबतक

(2) व्याकरण– (क) पाणिनी की अष्टाध्यायी इसमें 18 अध्याय है।
(ख) कातयायन की वार्तिक
(ग) पातंजलि का महाभाष्य
वार्तिक तथा महाभाष्य– अष्टााध्यायी की पूरक तथा टीका है।

(3) निरूक्त– जो शास्त्र यह बताता है कि अमुक शब्द का अमुक अर्थ होता है। उसे निरूक्त शास्त्र कहते है। यासक से निरूक्त की रचना की थी इसमें 12 अध्याय है।

(4) छंद– पिंगल द्वारा रचित छंदशास्त्र

(5) ज्योतिष– सर्वप्राचीन ज्योतिषाचार्य– लगशमुनि कालान्तर के ज्योतिषाचार्य– आर्यभट्ट, लल वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, मुंजाल, भास्कराचार्य।

स्मृति

सर्वप्राचीन– मनुस्मृति–याज्ञवाक्य

पुराण

पुराण का शाब्दिक अर्थ– प्राचीन होता है।

18 पुराण – सर्वाधिक प्राचीन– ब्रह्मपुराण

– नवीन – ब्रह्मांडपुराण

पुराणों के विषय

1. सर्ग
2. प्रतिसर्ग
3. वंश – देवताओं और ऋषियों के वंश
4. मन्वन्तर – अनेक मनु
5. वंशानु चरित – राजवंश

2– बौद्धग्रंथ

पिटक– विनय पिटक, सुत्र पिटक, अभिधम्म पिटक

(1) विनयपिटक– इसमें शिक्षु और भिक्षुणों के संघ एवं दैनिक जीवन सम्बंधी आचार विचार विधिनिषेध और यम–नियम इत्यादि संगृहित है।

विभाग – नियपिटक के निम्न विभाग है।

1. सुत्रविभाग– (क) महाविभाग (ख) भिक्षुणी विभाग
2. खंधका – (ख) महाबग्ग (ख) चुल्लबग्ग
3. परिवार अथवा परिवार पाठ

महाबग्ग व चुल्लबग्ग– ये बौद्धो के सर्वप्राचीन ग्रंथ है। इनमें भिक्षुओं के संधीय एवं दैनिक जीवन के सम्बंध में नाना प्रकार के विधि निर्षध एवं यम नियम है।
चुल्लबग्ग– इसमें कुल 12 अध्याय है। 11वें और 12वें अध्याय में क्रमशः प्रथम और द्वितीय बौद्ध संगीतियों का वर्णन है।
(2) सुत्तपिटक– सुत्त का अर्थ धर्मोपदेश अथवा धर्माख्यान होता है। सुत्तपिटक इन्हीं धर्मोपदेशों की समुच्चय है।
निकाय– सुत्तपिटक के 5 निकाय है।

- दीर्घ निकाय– इस निकाय की ग्रंथ महापरि निष्वान सुक्त है।
- मज्क्षिमनिकाय
- संयुक्त निकाय
- अंगुत्तर निकाय
- खुद्दक निकाय– यह लधु ग्रंथो का संग्रह हैं इसके निम्न ग्रंथ है।

1. खुद्दक पाठ।
2. धम्मपद– इसमें धर्म शील और सदाचार का सुंदर सिद्धांत है।
3. उढ़ान
4. इतिपुत्तक– बुद्ध वाक्यों का संग्रह।
5. सुत्तनिपात– यह विविध धर्मोपदेशों और धर्माख्यानों का संग्रह है।
6. विमानवत्थु
7. थेरीगाथा
8. जाटक– भरहुत एवं सांची के स्तूपों पर अनेक जातक दृश्य अंकित है। रचना काल प्रथम शताब्दी ई0 पू0
9. बुद्ध वंश– अंश, उपदान, चरियापिटक

अभिधम्मपिटक

इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ– कथा वस्तु

खाली बौद्ध ग्रंथ– मिलिन्दपन्हों BY नागसेन मिनेन्डर व नागसेन संवाद।
दीपवंश– इसमें सिंहल द्वीप के इतिहास का वर्णन है। इसकी रचना विलुप्त अष्ठकथाओं के आधार पर हुई है। रचना काल 495वीं शताब्दी।

महावंश– यह भी सिंहल का ग्रंथ है। इसकी रचना महानाम नामक कवि ने 5वीं शताब्दी मे की थी। काव्य की दृष्टि से यह ग्रंथ दीपवंश से अधिक उत्कृष्ट है।
विशेष– चन्द्रगुप्त मौर्य का विशेष ज्ञान हमें इन्हीं सिंहली ग्रंथो से होता है।
टीका ग्रंथ–

1. सुमंगल विलासनी
2. सामन्त प्रसादिका
3. महावंश टीका

"संस्कृत बौद्ध ग्रंथ"

1. महावस्तु– यह महात्मा बुद्ध का जीवन वृत्त है। यह ग्रंथ हीनयान तथा महायान के बीच की संस्कृति काल में लिखा गया था।
कलितविस्तार– अर्थ– ललित बुद्ध का सविस्तार।
वर्णन – यह महायानी ग्रंथ है।
3. दिव्यावदान–

सूत्रकाल– उपनिषदों के बाद तीन प्रकार के सुत्रकाल आता है।
1. श्रौतसूत्र (यज्ञ सम्बंधी)
2. गृहय सूत्र (गृहस्य जीवन से सम्बंधित)
3. धर्मसूत्र (धार्मिक विषय)

स्मृति साहित्य– सुत्रकाल के बाद स्मृति काल आता है।
दोनो का प्रतिपाध विषय– धार्मिक व सामाजिक विधि व सुत्रसाहित्य गद्य तथा पद्य दोनो में है जबकि स्मृति साहित्य केवल पद्य में ही है।

संगीति

(1) प्रथम बौद्ध संगीति– चुल्लबग्ग में वर्णित।
उद्देश्य – महात्मा बुद्ध के समस्त उपदेशों को संगृहीत कर धम्म और विनय को निश्चित रूप देने के लिए।
सुभद्र–सुभद्र नामक व्यक्ति ने बुद्ध की मृत्यु पर संतोष प्रगट करते हुए कहा था कि"अब हम सब महात्मा बुद्ध द्वारा निर्मित एवं प्रतिपादित अनेक दुसह विधि निषेधो से मुक्त हो गये है। इसकी कारण इस संगीत का भायोजन किया गया था।"

स्थान– राजगृह– अध्यक्षता– महाकश्यप

(2) द्वितीय बौद्ध संगीति– वैशाली बुद्ध की मृत्यु के 100 वर्ष बाद कालाशोक के समय में अध्यक्षता महाकास्याकन
कारण– इसके आयोजन का मुख्य कारण बौद्ध भिक्षुको का सैद्धांतिक मतभेद बताया जाता है।

मतभेद– वैशाली के भिक्षु – 10 सिद्धान्तो में विश्वास करते थे। परन्तु यश नामक भिक्षु ने उन्हें धर्म विरूद्ध घोषित किया। यहीं मतभेद था।
वर्णन – चुल्लबग्ग में।

(3) तृतीय संगीति– पाटलिपुत्र – मोगल्लिकपुत्र तिष्य

वर्णन– दीपवंश, समन्तय पसादिका में मात्र उत्तरी भारत, चीन, तिब्बत, एवं अन्य ग्रंथो में इसका वर्णन नहीं मिलता। ध्वेन सांग तथा अशोक के अभिलेखो में इसका कोई वर्णन नहीं मिलता।
कारण– उपोसथ तथा पवारणा (पाठ) का काफी दिनों से न होना तथा संघ की धार्मिक व्यवस्था में शिथिलता।
कथावस्तु– इसकी रचना इसी संगीत के बाद मोगल्लिपुत्र तिष्य ने की थी।

(4) चतुर्थ संगीति– काश्मीर – वंश मित्र

कारण– धार्मिक मतभेदो को दूर करने के लिए।
महावंश व दीपवंश में इसका वर्णन नहीं मिलता।
ध्वेनसांग के अनुसार यह संगीति काश्मीर में हुई थी।
तारानाथ के अनुसार यह जालन्धर में हुई थी।
अब्दुल अहद के अनुसार– यह जौनपुर में हुई थी।

3– **"जैनधर्म ग्रंथ"**

आगम– इसमें साधारणतयः 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसुत्र है।
पाटलिपुत्र प्रथम संगीत– महावीर की मृत्यु के 160 वर्ष बाद लगभग 300 BC में अपनी विच्छखल धर्म परम्पराओं को संगृहित और संगठित करने के लिए जैन भिक्षुओं ने पाटलिपुत्र में अपनी प्रथम संगीत का आयोजन किया।

द्वितीय संगीत– 313 AD में धार्मिक ग्रंथों को पुनः संगठित करने के लिए।
स्थल– यह संगीत एक ही समय में दो स्थलों पर आपेक्षित की गयी थी।

प्रथम– मथुरा–अध्यक्ष– स्कन्दिल
द्वितीय– वलभी– अध्यक्ष– लागार्जुन सूरी

तृतीय संगीत– भिन्न–भिन्न जगह आयोजित होने के कारण द्वितीय संगीत में संगठित ग्रंथो में मतभेद होना स्वाभाविक था। इसलिए इस मतभेद को दूर करने के लिए तृतीय संगीत का आयोजन किया गया था।
स्थान – वलभी – अध्यक्ष – देवर्धि
समय– 513 अथवा 520 AD (N.C.E.R.T शताब्दी छठी सदी)
इसी संगीत में समस्त ग्रंथो की लिखित रूप दिया गया।
अंग–12 (1) आचारांग सन्त– जैन भिक्षुओं के आधार नियम।

(2) भगवती सुत्त–इसमें महावीर स्वामी के जीवन एवं कार्य कलापों का वर्णन है।
(3) नायाधम्मकहा सुत्त– इसमें महावीर की शिक्षायें संकलित है।

व्याख्या ग्रंथ– कलांतर में जैन धर्म ग्रंथो के उपर समय–समय पर अनेक व्याख्या ग्रंथ लिखे गये। ये व्याख्या ग्रंथ 5 प्रकार के है।

1. नियुक्ति
2. भाषा
3. चरबू
4. टीका

प्रमुख टीका कार– हरिभद्र सूरि– शीलांक– नेमिचन्द्र सूरि–अभयदेव सूरि– मलयागिरि।

"ऐतिहासिक ग्रंथ"

अर्थशास्त्र– रचनाकाल– चौथी शताब्दी ईसा पूर्व
गार्गी संहिता– प्रथम AD (ज्योतिष ग्रंथ)
कामन्दकीय नीतिसार– रचना काल 700–800 AD
बृहस्पति का अर्थ शास्त्र– 900–1000 AD
विषय– राजनीतिक कर्त्तव्य
राजतरंगिणी– 12वीं शताब्दी – कल्हण
गौडहवों– वाक्रपतिराज – प्राकृत भाषा
कन्नौज नरेश यशो वर्मा की दिग्विजय।
नवसाहसांक चरित्र – परिमल गुप्त – परमार वंश का इतिहास
विक्रमांक देव चरित्र – (विल्हण) कल्याणी के चालुक्य वंश का इतिहास
मानसार– वास्तु कला से सम्बंधित

"विदेशी यात्रा विवरण"

(1) यूनानी यात्रा– इन्हें तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(क) सिकन्दर के पूर्व यूनानी लेखक–
स्काइलैम्स– हिकेतिअस मिलेटस
हेरोहोटस– इतिहास का जन्मदाता
रचना – हिस्टोरिका – इसमें भारत की पश्चिमोत्तर जातियों का वर्णन मिलता है।

शेष दोनो में भारत का कोई वर्णन नहीं मिलता।

केसिअस– रचना – इंडिका व पार्सि का – इसमें भी भारतीय इतिहास मिलता है।

(ख) सिकन्दर के समकालीन लेखका–

1. निर्याकस–
2. एरिस्टोव्यूलस– रचना – युद्ध का इतिहास (History of War)
3. ओनेसिक्रिटस– इसने सिकन्दर की जीवनी लिखी थी।

(ग) सिकन्दर के पश्चात यूनानी लेखक–

1. मेगस्थनीज– इंडिका विलुप्त ग्रंथ इसके कुछ उद्धरणो को संगृहित कर डा0 स्वानवेक ने 1846 AD में इसे प्रकाशिक किया था। 1891 AD में मैकक्रिण्डल महोदय ने इस संगह का अंगेजी मे ंअनुवाद किया था।
2. डाईमेकस– सैल्यूकस के दरबार में यूनानी राजदूत।
3. स्ट्रैबो – प्रथम शताब्दी – ग्रंथ भूगोल
4. प्लिनी – ग्रंथ Natural History– यह 77 AD में प्रकाशित हुआ था।
5. एरियन – ग्रंथ– (क) इंडिका (ख) सिकन्दर का आक्रमण
6. डायोनीसिअस – राजदूत – अशोक की सभा में
7. पेट्रोक्लीज –
8. पालीवियस –
9. पेरीप्लस – प्रथम AD की रचना
10. एलियन – इसने दो ग्रंथ लिखे।

(क) A Collection of Miscellaneous

(ख) On the peculiatities of Animals पशु जगत पर

रोमन लेखक

(1) रालमी– द्वितीय शताब्दी, भूगोल

चीनी यात्री

सुमाचीन– चीनी इतिहास का जन्मदाता। इसने अपने ग्रंथ में भारत का भी वर्णन किया है।

फाहियान – यह 399 AD में भारत आया था। इसका उद्‌देश्य बोद्ध धर्म ग्रंथो का अध्ययन तथा अनुशीलन था। यह भारत में 15–16 वर्ष तक रहा। इसने चन्द्र द्वितीय समेत किसी भी नरेश का वर्णन अपनी यात्रा विवरण में नही किया है।

ध्वेन सांग– 629 AD में आया था। 12 वर्षो तक 642 AD तक रहा। यह दक्षिणी भारत को छोड़ कर शेष समस्त भारत की वर्णन किया था।

ध्वीली– यह ध्वेन सांग का मित्र था तथा ध्वेनसांग की जीवनी लिखी थी।
इत्सिंग– यह 695 AD के लगभग भारत आया थां।
तारानाथ– कंगूर तथा तांगूर नामक दो ग्रंथो की रचना की थी।

"पुरातत्व सम्बंधी साधन"

1. अभिलेख
2. स्मारक
3. मुद्राये

(1) अभिलेख–अशोक के पूर्ववर्ती अभिलेख

1. पिप्रा कलश अभिलेख – बस्ती
2. बडली अभिलेख – अजमेर

फिर भी अभिलेखो की परम्परा भारत में अशोक काल से शुरू होती है। अभिलेखो के निम्न प्रकार है।

1. स्तम्भ लेख–

- अशोक के स्तम्भलेख
- जैनियों के दीप स्तम्भ
- वैष्णवों के गरूण ध्वज स्तम्भ
- क्षत्रिओं के कीर्ति स्तम्भ विजय स्तम्भ और रण स्तम्भ
- होलियो डोरस पका विदिशा स्तम्भ लेख
- स्कन्द गुप्त का भित्तरी स्तम्भ लेख
- समुंद्र गुप्त का प्रयाग प्रशस्ति
- चन्द्र द्वितीय का मेहरौली स्तम्भ लेख

2. शिलालेख–(पहाड़ियों को काट कर)

- अशोक के शिलालेख
- पुष्यामित्र शुंग का अयोध्या अभिलेख
- रूद्रदामन का जूनागठ अभिलेख
- खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख

3. गुहा लेख–

- वराबर गुहालेख – अशोक
- नागार्जुनी गुहालेख – दशरथ
- नासिक नानाघाट कार्ले – सातवाहन कनिष्ठक

सरविनियम जोन्स ने – यूनानी इतिहासकारों के सेन्ट्रो कोटरस की पहचान चन्द्र गुप्त मौर्य से किया।

1. सुदर्शन क्षील– सुदर्शन क्षील का उद्देश्य केवल रूद्रदामन के गिरनार अभिलेख (150 AD) तथा स्कन्द गुप्त के जूनागढ़ अभिलेख मे मिलता है।

चन्द्रगुप्त मौर्य व अशोक के अभिलेखों में इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। इनकी जानकारी गिसार अभिलेख से ही होती है।

2. जेम्स प्रिंसेप– 1837 में सर्व प्रथम आप ने ही अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सफलता पायी।

"मृदभाण्ड"

क्रम से 1. काले एवं लाल मृद भाण्ड (Black and Red) – इनका समय हड़प्पा सभ्यता के बाद माना जाता है। इससे स्थायी जीवन के अवशेष नहीं मिलते। तिथि– अनिश्चित (हड़प्पा कालीन)

2. गेरू वर्णी मृद भाण्ड Ochre Colour potterg तिथिक्रम की दृष्टि से इसे ऋग्वैदिक काल का माना जाता है। ये ऋग्वैदिक अज शिगु एवं यक्ष जातियों द्वारा प्रयुक्त होते थे। अस्थायी जीवन

3. नित्रित घूसर मृदभाण्ड (P.G.W.) 800–400BC– यह पंजाब, हरियाणा, राजस्थान एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पाया जाता है। ये तिथिक्रम से उत्तर वैदिक काल के है। इनसे स्थायी जीवन का संकेत मिलता है। हरियाणा के भगवानपुरा नामक स्थान से एक पक्की ईंट की 13 कक्षीय भवन इसी संस्कृति तथा काल का मिला है।

4. उत्तरी कालीपतिश वाले मृदभाण्ड– (N.B.P.W.½ 400–100 – बौद्ध व मौर्य युग– ये पूर्वी यू0 पी0 बिहार से मिले है। वैसे इनका विस्तार समस्त उत्तरी भारत में था। आहतमुद्राये (6वीं सदी ईसा पूर्व) इसी काल को ही इनसे स्थायी व कृषि जीवन का पूर्ण संकेत मिलता है।

"श्रेणी व्यवस्था"

1. श्रेष्ठि– यह श्रेणियों का प्रमुख हाता था जो निर्वाचित न होकर राजा द्वारा नियुक्त किया जाता था। यह पद वंशानुगत भी होता था।
2. नैगम व निगम– अमरकोष में निगम का प्रयोग नगर के लिए तथा नैगम का प्रयोग व्यापारी के लिए हुआ है।
3. निगम का प्रधान – श्रेष्ठि
श्रेणी का प्रधान – प्रमुख
पूग का प्रधान – जेष्ठक होता था।

भेद

श्रेणी – यह विभिन्न स्थानों के व्यापारियों तथा व्यवसायियों की संस्था थी।
पूग – यह स्थानीय हितो की प्रतिनिधि संस्था थी।
निगम – यह मात्र एक नगर के व्यवसायियों व व्यापारियों की संस्था थी।
4. श्रेष्ठि – यह सबसे अधिक लोकप्रिय संस्था थी।
5. सेष्ठित्थान – यह श्रेणियों का कार्यालय था।
6. श्रेष्ठि – शासन तथा व्यापारियों दोनो को प्रतिनिधित्व करता है।
7. प्रबंध समिति– श्रेणी संगठन की एक प्रबंध समिति होती थी, जिसमें 2 से 5 सदस्य रहते थे।
8. जातकों में 18 प्रकार की श्रेणियों का उल्लेख मिलता है।

"अभिलेखों में श्रेणियों का विवरण"

1. नासिका अभिलेख– (उषवदात), (जमाता नहवान)– इसमें दो प्रकार की श्रेणी का उल्लेख है।
(क) तंतुवाय (बुनकर)– उल्लेख मिलता है कि "नहवान का दामाद उषवदात– इस श्रेणी के पास उहलार कार्षादन जमा कराया था। 72 हजार एक कार्षाधण प्रति सैकड़ा ब्याज पर और एक हजार की ब्याज दर तीन चौथाई पन थी।"
(ख) कुम्भकार की श्रेणी–
2. मंदसौर अभिलेख– (कुमार गुप्त)
(क) पट्टवाय श्रेणी– (रेशम बुनकर) ज्ञात होता है कि पट्टवाय श्रेणी ने मंदसौर में सूर्य मंदिर का निर्माण कराया था।
3. इंदौर अभिलेख– स्कन्द गुप्त
(क) तैलिक श्रेणी – इसने सूर्य मंदिर में दीप जलाने के लिए तेल दान में दिया था।
4. मथुरा अभिलेख– (कुषाणकालीन)
(क) आटा पिसक– इसमें आटा पीसने वाली श्रेणी का उल्लेख है।

5. जुन्नार अभिलेख– इसमें बंसकर, कसेरा व धान्यविक्रेताओं की श्रेणियों का उल्लेख है।

नगरम् व मनीग्रामम्– यह नानादेशि की तरह दक्षिण भारत की श्रेणी का नाम है।

1. श्रेणियों को – आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, जनकल्याण एवं राजनैतिक, कार्य करने पड़ते थे।
2. ये बैंकिग का कार्य भी करती थी। इनकी अपनी सेना (श्रेणिबल) तथा न्यायालय होते थे। यद्यपि कुछ परिस्थितियों में इनके निर्णयों के विरूद्ध राजा के न्यायालय से अपील हो सकती थी। ये सिक्के तथा मुद्राये भी जारी करती थी।
3. श्रेणी सदस्य सामूहिक तथा व्यक्तिगत दोनो रूप में व्यापार कर सकते थे।
4. राजपूत काल में सामंतवाद के कारण श्रेणियों का हाल हुआ था। किन्तु दक्षिणी भारत मे इनका विकास अनवरत रूप से जारी रहा।
5. प्रयाग के समीप भत्ता नामक स्थान की खुदाई से मौर्य कालीन ब्राह्मी लिपी में – सहजाति निगमस अंकित एक मिट्टी की मुद्रा मिली है।
6. अवदानशतक में उल्लेख मिलता है कि– वाराणसी के 500 वणिकों ने मैत्रकायण नामक सार्थवाह के साथ मिलकर साक्षा व्यापार के निभित्ते सार्थै गठित किया था।

1. सम्मूय समुत्थान– (स्मृतियों) कई व्यापारियों द्वारा मिलकर साक्षा व्यापार को समूप समुत्थान कहा जाता था।
2. समय– स्मृतियों में साक्षा व्यापार सम्बंधी नियमों को समय कहा गया है।

(क) जेष्ठक – शिल्पी संघ के अध्यक्ष कों
सेट्ठी – इसके हाथों में व्यापार व उधोग होता था। यह एक प्रकार का महाजन और बैंकर भी था।
(ख) भोगागम – नगर में रहने वाले शिल्पी व व्यापार संघो जैसे सेरष्ठ व जेष्ठक के निर्वाह लिए राजा द्वारा दी गयी भूमि को।

उत्तर वैदिक काल D.N.G.I.A (Single)

शेष भाग –

1. उत्तर वैदिक काल में – राजा के चुनाव की प्रथा खत्म हो गयी।
   ऋग्वैदिक काल में – चुनाव के द्वारा राजा का पद स्थिर किया जाता था और उसके बाद उसके राज्याभिषेक (राजसथ पड़ा अवधि 2 वर्ष) का अनुत्थान सम्पन्न होता था। अब राज पद के लिए उत्तराधिकार की प्रथा चल पड़ी। यहीं

नहीं अब धार्मिक कर्मकांडो के समय राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित करने की प्रथा भी चल पड़ी।

2. क्षेत्रिय – विद्वान ब्राह्मण
3. वाजधेय यज्ञ– प्रतिवर्ष 17 दिन तक चलता था।
4. राजसूय यज्ञ– (सम्राट का पद प्राप्त करने के लिए 2 वर्ष तक) राज्याभिषेक के समय किया जाता है। इस यज्ञ के संचालन करने वाले पुरोहित को 240000 गायें दान मे दी जाती थी।
5. अश्वमेघ यज्ञ– सबसे प्रसिद्ध और महत्व यज्ञ था। यह 3 दिन तक चलता था और घोड़ा एक वर्ष तक धूमने के लिए छोड़ा जाता था। वर्ष के अंत में धोड़े को वापस लाकर 600 सांडो के साथ उसकी भी बलि दी जाती थी। 21 वांक्ष गायों की बलि के साथ यज्ञ का समापन होता था।
6. उपनिषद काल तक तपस्या का खुब प्रचार प्रसार हो गया। इस प्रकार तपश्चर्या से वैदिक यज्ञ की श्रेष्ठता को और यज्ञ से लाभान्वित होने वाले ब्राह्मणों को भी चुनौती दी।
7. चारो आश्रमों की व्यवस्था– शुद्रो के लिए नही थी। इन आश्रमों का विकास उपनिषदों में विकसित तपश्चर्या के प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हुआ था–

    1. शिक्षा का द्वार सभी द्विजों के लिए खुला था लेकिन वेदों पर एक मात्र ब्राह्मणों का ही अधिकार था।
    2. आर्यो की शिक्षा मौखिक थी उन्होनें किसी प्रकार की लेखन कला को विकसित नहीं किया था।

"वैदिक देव मंडल" – स्तुति का अर्थ प्रार्थना

1. घु स्थानीय अथवा आकाश देवता– घौस, वरूण, मित्र, आदित्य, सूर्य, सविता, उषा, विष्णु, पूषा, अश्विनी, चन्द्रमा।
2. अंतरिक्ष देवता– इन्द्र, रूप, बात, वायु, पर्जन्य, मरूत आय, माटरिश्वा आदि।
3. पृथिवी स्थानीय देवता– अग्नि, बृहष्पति, सोम, समुन्द्र, सरस्वती आदि।
    1. वरूण – इसका उल्लेख जगत के नियता देवताओं के पोखक तथा ऋत के अधिपति के रूप में किया गया है। कालान्तर में यह आप जल देवता मात्र रह गया।
    2. सविता– इसमें सूर्य का दिन में दिखाई पड़ने वाला रूप और रात्रि में न दिखाई पड़ने वाला रूप दोनो था।
    3. पूषन– यह औषधि और वनस्पति जगत का देवता था।
    4. रूद्र– क्षंक्षावत के साथ घनघोर काले बादल में के साथ उग्र रूप।
    5. अग्नि को– आपा नपात– जाट वे दस तथा अबुन वक्षु कहा गया है।
    6. सोम– यह अमर हब, स्फूर्ति आहलाद शक्ति प्रेरणा का प्रतीक था।

7. मरूत— यह रूद्र पुत्र था तथा क्षंक्षावात का देवता था। इन्द्र के भाई कहे गये है।
8. पर्जन्य— यह जल वर्षा तथा नदियों का देवता माना गया है।

   (क) आपः यह वैदिक कालीन उषा की तरह देवी थी। इसका उल्लेख मात्रा में रूप में हुआ है।
   (ख) उषा— यह सूर्य की पत्नी तथा प्रेयसी थी।
9. आख्यानी — वनदेवी
10. सिन्धुनदी — आर्यो ने सिन्धु नदी को भी देवी माना।
11. सरस्वती — बुद्धि को

1. मतस्य पुराण — लिंग पूजा उल्लेख मिलता है।
2. भागवत पुराण में — दसावतारो का वर्णन है।
अमरकोष में 39 अवतारो का वर्णन है।

यज्ञ

25 से 40वर्ष की आयु का सपलीक व्यक्ति ही यज्ञ सम्पन्न कर सकता था।
हवि— यज्ञ में घी, दूध, धान्य तथा मांस की आहुति दी जाती थी। जिसे हव्य कहा जाता है।

1. सोमयज्ञ— सम्राट, एकराट आदि बनने के लिए राजन्यवर्ग विशालकाय सोमयज्ञो का निष्पादन कराते थे।

इस यज्ञ के पीछे भौतिक और आर्थिक समृद्धि प्रेरणा थी तथा यह समझा जाता था कि देवी शक्ति की कृपा से व्यक्ति की संद्धि होती है।
यज्ञ के आधार तत्व— बलिदान, पितृपूजा, उर्वरता प्रदापक, अनुष्ठान, देवता से सामीत्य स्थापन तथा पापों से मुक्ति आदि।

प्रमुख यज्ञ—

1. अग्नि होल यज्ञ— इसे पापों के क्षय और स्वर्ग की ओर ले जाने वाले सर्वोत्तम नाव के रूप में स्वीकार किया गयाा था।
   यह प्रातः और सायं काल अग्नि की उपासना के साथ सम्पन्न किया जाता था।
2. चातुर मास्थ या— यह प्रति चार माह में सम्पन्न किया जाता है। यह पापों के क्षय के निमित्त किया जाता था।
3. अग्निष्टोम यज्ञ— यह पांच दिनों तक चलता था। इसका उद्देश्य भी सोमयज्ञ की तरह भौतिक व आर्थिक समृद्धि था।
4. पुरूषमेघ यज्ञ— यह भी पांच दिनों तक चलता था तथा इसमें मनुष्य की बलि दी जाती थी।
5. पंचमहायज्ञ—

- ब्रहमयज्ञ– यह वेदाध्ययन व स्वाध्याय से सम्बंधित था।
- देवयज्ञ – गृहस्थ इसमें देवताओं को हवि प्रदान करता था।
- भूतयज्ञ – इस सम्पूर्ण प्राणी को संतुष्ठ करने का प्रयत्न किया जाता था।

6. राजसूययज्ञ– इसे केवल क्षत्रिय ही करा सकता था ब्राह्मण वे वैश्य नहीं। इस यूज्ञ के पीछे उद्‌देश्य यह था कि पृथ्वी विजय करने में जो भी पाप राजा से होता था इस यज्ञ करने से समाप्त हो जाता है। जिसमें गायें और गोंव पुरोहित को दान में मिलते है।
7. नागयज्ञ – इसमें स्वर्ग प्राप्ति की कामना की जाती थी।

पूर्ववैदिक काल दत्त चौधरी मजूमदार

1. इन्द्र के उपासक दो प्रतिद्वन्दी दलों में विभाजित था। प्रथम में– भरत तथा उनके मित्र संजयः थे। दूसरा दल– यदु, तुर्बस, द्रध्यु, अनु पुरू थे।

   यदु व तुर्बश को ऋग्वेद की एक ऋचा में दास कहा गया है जबकि पुरू को मृघ्रवाचः कहा गया है। (समझ में न आने वाली भाषा बोलने वाले)
2. दास व दस्यु– उपरोक्त दोनो दलों के अलावा दास व दस्यु थे।
3. वृचीवृत्त– तुर्बस के मित्र थे। जिनको सम्मिलित रूप से सृजयों ने हराया था।
4. शम्बर व की कट नामक दासों के सरदार को दिवोदास (सुदास का पिता) ने पराजित किया था। दासों के विरूद्ध लड़ाई में भरतों का साथ पुरूओं ने भी दिया था। जिसका राजा त्रनसदस्यु था।
5. गोप– जन के नायक अथवा राजा को गोप कहा जाता था। चरवाहा को भी गोप कहा जाता था।
6. सेना कई इकाईयों में विभक्त होती थी, जिनके नाम शर्घ, ब्रात तथा गुण थे। ब्रात पति– ग्रामीण हो सकता था और युद्ध में बहुत से परिवारों के प्रधानों व कुलपों का नेतृत्व भी करता था।

   ग्रामीण – यह सैनिक व असैनिक दोनों कार्यो की देखभाल करता था।

1. सिंचाई नहरो से होती थी। खाद का प्रयोग भी होता था।
2. जीविका का प्रधान आधार कृषि थी।
3. बृबु– यह ऋग्वैदिक कालीन वगि व्यापारी था जो महान दानी था।
4. निष्क की तौल निश्चित थी।
5. मना– यह भी सम्भवतः स्वर्ण सिक्का था।

6. पथिकृत (पथ का निर्माता)– यह उपाधि अग्नि देवता के लिए थी। जो व्यापारियों का मार्ग सुलभ बनाता था। जंगल को अग्नि द्वारा साफ किया जाता था।

(1) कला काव्य का पूर्ण विकास हुआ था। ऋग्वेद के समय के लोगो के पास लेखन कला नहीं थी।

प्राचीन लिपी की उप्तत्ति जिसमें अशोक और उसके अधिकारियों के अभिलेख लिखे गये है। सेमेटिक लोगो से हुई थी न कि वैदिक आर्यो से आयों के प्रारम्भिक साहित्य का प्रेषण मौखिक होता था।

(2) ऋग्वेद में हजार खम्भों वाले घरों का उल्लेख मिलता है।

(3) पूर्ववैदिक काल में खगोलविद्या ने निश्चित रूप से उन्नति किया था और कुछ तारों का पता लगाकर उनका नामकरण किया गया था।

(4) शिव – इन्द्रापूजक तित्सुओं के विरोधी थे। जबकि कृष्ण, इन्द्र के विरोधी थे। यह कृष्ण महाभारत का कृष्ण नहीं था।

5. वरूण – आकाश का देवता।

इन्द्र – वर्षा का बादल का देवता

वरूण देवता की उपाधि 'असुर' है। या पापमोचक देवता भी था।

वरूण – बाद में वरूण का स्थान गौण हो गया। वह मात्र जल का स्वामी अथवा भारतीय समुंद्र देवता हो गया।

वरूण+मित्र – जैसे दावा+ पृथ्वी

वरूण का सबसे घनिष्ठ देवता मित्र था।

1. उत्तर कालीन तीन पौराणिक देवताओं (ब्रह्मा, शिव, विष्णु) में से दो का नाम विष्णु व रूद्र शिव का नाम ऋग्वेद में उल्लिखित है। जबकि ब्रह्मा का उल्लेख स्पष्ट रूप में नहीं मिलता।
2. पुर्नजन्म की भावना नहीं थी। न ही मोक्ष ही।

D.H. Gita (Single)

1. गीता– यह महाभारत के छठवें पर्ण का भाग है।
2. ऋग्वैदिक आर्यो को यमुना नदी के आगे का भौगोलिक ज्ञान नहीं था।
3. दास व दस्सु पणि लोगो से भी घृणित थे।
4. ऋग्वेद में विजेताओं को (आर्यो) को (नगर निर्माता) नहीं बल्कि नगर विहवंशक कहा गया है।
5. अयस डमंदे कांसा– यह सर्वसम्मत निर्णय D.N Gita
6. दुहिती पुत्री का – क्योंकि वह गाय दुहती थी।
7. गोवध निषेश आर्थिक महत्व के कारण था न कि पवित्रता के लिए।

8. गोहन (गाय का वध करने वाला)– यह शब्द अतिथियों के लिए प्रयुक्त होता था।
9. पशुपालन सामूहिक रूप से होता था।
10. हड़प्पा वासी स्वंय हाथ से खेत जोतते थे, जबकि आर्ये बैल व हल से खेत जोतते थे।
11. ऋग्वेद में 5 ऋतुओं का उल्लेख है।
12. यव– जौ
13. ऋग्देव में भूमि व भूमि माप के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। लेकिन कभी भी किसी व्यक्ति द्वारा जमीन की बिक्री हस्तांतरण गिरवी दान आदि का उल्लेख नहीं मिलता।
अतः जमीन पर व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं होगा।
14.राजा (फौजीनायक)– यह गायों के लिए युद्ध वाला था न कि भू भाग के लिए। वह भू भाग पर नहीं, बल्कि अपने कबीले पर राज्य करता था।

उत्तर वैदिक काल – दत्त चौधरी मजूमदार
1. उत्तर वैदिक काल में– आर्यो के विस्तार को जितना योगदान राजाओं का था उतना ही पुरोहितों का भी था।
पूर्ववैदिक काल में आर्य मात्र गंगा के उपरी भाग तक ही विकसित थे।
2. आर्य जगत का केन्द्र मध्य देश था।
3. कुरू + पांचाल
कुरू = पुरू + भारत – राजधानी – आसन्दी बात (दिल्ली मेरठ) राजा – बल्हिक, प्रतिप्रिय, परीक्षित, जनमेजय।

पांचाल– यह एक अज्ञात ऋग्वैदिक जाति से निकली थी, जो क्रिवि कहलाती थी। जिसका सृंजयों व तुर्वशों से सम्बंध था।

राजधानी	–	काम्पिल्य
राजा	–	प्रवाहण जैवालि
ऋषि	–	आरूणि, श्वेद केतु

पांचाल– आध्यात्म व ब्राह्मण विद्या का केन्द्र था।
4. विदेह – यह उपनिषद काल का प्रमुख राज्य था। इसके राजा जनक याज्ञवल्मय मुनि के संरक्षक थे।

शासन

1. अब राजा सारी प्रजा का स्वामी होता था, लेकिन ब्राह्मण इससे परे थे। जो सोम को अपना राजा मानते थे।
2. राजा का प्रधान कार्य– सैनिक व न्याय सम्बंधी था।

3. राज्याभिषेक– वाजपेय यज्ञ में होता था न कि राजसूप यज्ञ में।

(1) उपाधि

1. पूर्व के राजा – सम्राट कहलाते थे।
2. दक्षिण के राजा – भोज कहलाते थे।
3. पश्चिम के राजा – स्वराट कहलाते थे।
4. उत्तर के राजा – विराट कहलाते थे।

(2) ग्रामीण व सूत– सर्व साधारण वर्ण से चुने जाते थे।

(3) उनकि क्षत्रिय व ब्राह्मण वर्ग से। इनकी उपाधि राजा कृत अर्थात राजा बनाने वाली थी।

(4) उत्तरवैदिक काल में पूरोहित सेना की व ग्रामिणी स्पश व दूत जैसे अधिकारियों के अलावा संग्रहितु (कोषाध्यक्ष) भागदुध (कर संग्राहक)

सूत– (रथवाहक) क्षत्रू अक्षावाप (जूरू निरीक्षक)

गोविकर्त्तन (आखेत में राजा का साथी)

पालागल (दूत) जैसे कर्मचारियों का उल्लेख मिलता है।

सचिव नामक उपाधि का उल्लेख भी मिलता है।

(5) बलि व शल्क दो मुख्य कर थे।

(6) स्थपति – (बाहरी क्षेत्रों का प्रबंध कर्ता)

शतपति – (सौं गांवों के समूह की देखभाल करना नामक अधिकारियों का भी उल्लेख मिलता है।)

(7) जीवग्रिम – सम्भवतः पुलिस अधिकारी।

(8) ब्रात्य – ये मगध के निवासी थे। यद्यपि ये आर्य थे तथापि ब्राह्मण चर्म को नहीं मानते थे।

(9) निवाद ये अनार्थ थे।

धर्म

1. प्रजापति – सर्वश्रेष्ठ देवता

2. विष्णु – ये ऋग्वदे के समय सूर्य लोक के देवता थे। उत्तर वैदिक काल में विष्णु ने मानव जाति को मुक्त करने वाले और देवताओं के रक्षक के रूप में वरूण का स्थान से उत्तर वैदिक काल के अंत में ये वासुदेव के रूप में जाने गये।

(1) अधिवर्यु – यजुर्वेद के स्वतंत्र गद्य मंत्रों के गायक को अधिवर्यु कहते थे। ये पुरोहित यज्ञ में आवश्यक हस्त सम्बंधी कार्य भी करते थे। सामवेद के अधिकांश विषय ऋग्वदे के है।

(2) ब्राह्मण ग्रंथ – गद्य ग्रंथ – ये रचनाये प्रार्थना और यज्ञ की क्रिया से सम्बंध रखती है। इनमें विश्व की उत्पत्ति सम्बंधी सिद्धांत की कहानियों, पौराणिक कथा और गाथाये है।

(3) आरण्यक – ये ब्राह्मण ग्रंथो के परिशिष्ठ है। लेकिन ये बड़े बड़े यज्ञों को सम्पादित करने वाले विस्तृत नियमें की अपेक्षा धार्मिक रीतियों के लाक्षणिक महत्व और संहिता ग्रंथो के रहस्यपूर्ण अर्थ से अधिक सम्बंध रखते है।
(4) क्षुतति अथवा वैदिक साहित्य– चारो वैदिक ग्रंथ, ब्राह्मण, आरण्य को व उपनिषदों को मिलाकर क्षुतति अथवा वैदिक साहित्य कहा जाता है।
(5) वेदांग – वैदिक साहित्य की रचनाओं से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित सहायक ग्रंथो को वेदांग कहते है।
(6) स्मृति – वेदांग को स्मृति अथवा सूत्र भी कहते है।

D.H. Gha & Single

1. ऋग्वेद में केवल एक बार राज्य शब्द का और 27 बार जन शुद्र का प्रयोग हुआ है।
2. ऋग्वेद में वंशानुगत शासन प्रथा यही प्रभावित थी।
3. नियोग प्रथा– ऋग्वैदिक काल से ।
4. वशिष्ठ – मित्र + वरूण के वीर्य से पैदा हुए थे।
5. वल्बूथ व तरूक्ष दास सरदार थे।
6. शुद्र शब्दर का प्रयोग पर एक शुद्र नामक गुलाम कबीले के आधार पर किया गया।
7. त्वाष्ट्री व रूद्र – ये आर्येतर देवता थे।

....

उत्तर वैदिक काल

1. उत्तरवैदिक कालीन कृतियों में– दो समुंद्रो (हिन्द महासागर, अरब महासागर) का उल्लेख मिलता है। व हिमालय का भी अप्रत्यक्ष रूप से विंध्य पर्वत का भी।
2. उत्तर वैदिक साहित्य में – सैप्त सेन्धव क्षेत्रों का बहुत ही कम उल्लेख मिलता है।
3. भूमिपर व्यक्तिगत अधिकार की स्थापना।
4. हलों में 6–8–12–24 बैले जोते जाते थे।
5. गेंहु व जौं प्रमुख फसल थी।
6. धातु गलाने की तकनीक विकसित थी।
7. आर्यो ने भी सबसे ज्यादा तांबे का ही उपयोग किया।
8. महाजनी प्रथा व कुशीद कृति का पहली बार उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।
9. शुद्र वर्ण के प्रायः सभी लोग मजदूर थे। उच्चवर्ग के लोग गुलामों (दासों) के रूप में शुद्रो को नही अपनाया था।
10. चारो वर्णो के आपसी खान–पान पर अभी भी प्रतिबंध नहीं लगा था।

11. इस काल में सभा नामक कबीलाबाई परिषद में औरतों के भाग लेने पर प्रतिबंध नहीं लगा था।
12. भागदुध– यह उपज के हिस्से को कर के रूप में वसूल करता था। अब बलि स्वैच्छिक नहीं थी बल्कि इस अधिकारी द्वारा वसूली जाती थी। इसीलिए शायद राजा को विषमात्रा कहा गया है।
13. संग्रहित– यह शाही खजाने का प्रभारी था।

जैन धर्म – दत्त चौधरी मजूमदार

1. मख्खिलि पुत्र गोशाल ने – महावीर (सिद्धार्थ) के भ्रमण काल में 6 वर्ष तक अनका शिल्म बन कर उनके साथ रहा, बाद में यह साथ छोड़कर आजीवन सम्प्रदाय का नेता बन गया।
2. परिब्राजक– जैन व बौद्ध धर्म के अनुयायियों को परिव्राजक कहा गया है।
3. निर्ग्रन्थ– जैन धर्म के पहले को
4. पूर्व – महावीर द्वारा दिये गये मौलिक सिद्धांत 14 प्राचीन ग्रंथो में है जिन्हें पूर्व कहा जाता है।

बौद्ध धर्म

1. अशोक के रूम्मन देई अभिलेख से बुद्ध के जन्म स्थान का संकेत मिलता है।
2. बुद्ध का चचेरा भाई देवदत्त ही कुछ दिनों बाद बुद्ध से अलग हो गया था। एक प्रतिद्वन्दी सम्प्रदाय की स्थापना किया था।
3. बौद्धों ने जैनो की भांति आत्मा को अमर नहीं माना–

- वस्त्र त्याग में विश्वास नहीं करते थे।
- कायाक्लेष व कठिन तपस्या में विश्वास नहीं करना।
- ज्ञान प्राप्त महात्मा का आदर करते थे।

4. जैन–

- जैन प्राचीन देवताओं की पूजा व ब्राह्मणों की सेवा का पूर्णतः बहिष्कार नहीं किया था।
- जैनी– जीव जन्तु जल अग्नि धातु वायु आयु सभी में आत्मा मानते थे।

समानता

1. दोनो पुर्नजन्म व कर्म के सिद्धांत में विश्वास करते थे।
2. दोनो वेदो व पुरोहितों को नहीं मानते थे।

3. बौद्ध धर्म में भी अवतार की कल्पना की गयी है।
4. चीन में बौद्ध धर्म को ले जाने का श्रेय काश्यप मातंग को दिया जाता है।
5. पालि बौद्ध ग्रंथ – ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में संग्रहित किये गये थे। व द्वितीय मे ंभी।

....

मौर्य वंश – दत्त चौधरी मजूमदार

1. चन्द्र गुप्त की चाणक्य से प्रथम मुलाकात विंध्य के जंगल में हुई थी। चाणक्य ने भूमि गर्म से प्राप्त कोष से चन्द्रगुप्त के लिए एक सेना तैयार किया।
2. बम्ब मोरियन– इसका तात्पर्य नये मौर्य राजा अर्थात चन्द्रगुप्त मौर्य से है। तमिल अनुभूति से ज्ञात होता हैं कि बम्ब मोरियर दक्षिण में तिनेवेली तक गया था।
3. बिन्दुसार जब मृत्यु शैय्या पर था उस समय अशोक उज्जैन दक्षिण में तिनेवेली तक गया था।
4. अशोक की महत्वपूर्ण उपाधियों देवानारपिय व प्रिय दर्सिन नामक उपाधियों को उसके पूर्वजों की महत्वपूर्ण उत्तराधिकारियों व समकालीन राजाओं जैसे (श्रीलंका नरेश) ने भी धारण किया था।
5. अशोक के अभिलेखों की कोई प्रति अभी तक बंगाल में नहीं मिली हैं।
6. कल्हण की राजतरंगिणी अशोक को शिव का उपासक बताती है।
7. धर्म महामंत्रों की नियुक्ति मुख्यतः धर्म वृद्धि करने के लिए की गयी थी। ये राजधानी (पाटलिपुत्र) बाह्य नगरो तथा साम्राज्य के पश्चिमी और उत्तरी पश्चिमी सीमाओं पर किये गये।

अशोक–

1. अशोक ने जो कुछ किया उससे संतुष्ट न होकर उसने अपने पुत्रो और अन्य वंशजों को नये दरेश जीतने की बात को भूल जाने को कहा तथा शांति और लघु दंडता में आनंद की अनुभूति करने और धर्म विजय को सच्ची विजय समझने के लिए कहा।
2. अशोक ने कहा कि– धर्म विजय की उसकी नीति आश्चर्य जनक सफलता पायी और उसने अपने पड़ोसी यूनानी तमिल और सिंहलक राज्यों को आध्यात्मिक रूप से जीत लेने का दावा किया।
   इन राज्यों में से कुछ में लोकहित कारी संस्थाये स्थापित करवाया।
3. लंका की अनुभुति से ज्ञात होता है कि– स्वर्ण भूमि (दक्षिण बर्मा व सुमात्रा) में भी दूत मंडल भेजे गये थे।
4. अशोक ने बुद्ध को भगवाल कहा है।
5. अशोक ने बुद्ध के जन्म स्थान पर पूजा किया था।
6. सर्व साधारण जनता को अशोक ने जो आशा दिलाई वह सम्बांधी या निर्वाण की नहीं थी प्रत्युत स्वर्ग और देवताओं के साथ मिलने की आशा थी।
7. अशोक अपने लेखों में चक्षुदान आध्यात्मिक अंतदृष्टि को काफी महत्व दिया है।
8. ऐसा मालुम पड़ता है कि अशोक पहले धर्म नियमों के पालन को महत्व देता था लेकिन अपने जीवन के अंतिम काल में वह ध्यान पर अधिक महत्व देता था
9. समाज से तात्पर्य उत्सव से है।

10. अशोक के धम्म सम्बंधी व दान व कल्याणकारी कार्यो में उसकी एक रानी कारूवाकी ने विशेष एवं महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

उत्तर कालीन मौर्य

1. कुणाल– पुराणों के अनुसार अशोक के बाद उसका पुत्र कुणाल राजा बना। यद्यपि राजतरंगिणी इस राजा का उल्लेख नहीं करती। राजतरंगिणी अशोक के एक अन्य पुत्र जालौक को काश्मीर का शासक बताती है।

   कुल मिलाकर सम्भव यही प्रतीत होता है कि अशोक की मृत्यु के बाद उसका राज्य छिन्न भिन्न हो गया और उसके पुत्रों के मध्य वह बंट गया।
2. अभिलेखों में उल्लिखित अशोक के एक मात्र पुत्र तीवर को शयद अपनी पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा नहीं मिला था।
3. सम्पत्ति– कुणल के पुत्र सम्पत्ति का उल्लेख ब्राह्मण जैन व बौद्ध सभी ग्रंथ उल्लेख करते है। जैन अनुभुति के अनुसार– यह जैन धर्म का फालोवर था। लेकिन भागवत पुराण को छोड़कर कोई भी सम्पत्ति को कुणाल का पुत्र नहीं बताते।
4. दशरथ– इसने नागार्जुनी पहाड़ियों पर अपने तीन अभिलेख छोड़े है।
5. शालिशूक– इसे ज्योतिष ग्रंथ गार्गी संहिता ने दुष्ट व कलह प्रिय राजा बताया है।
6. मौर्य वंश – कुल मिलाकर 135 वर्ष (322–187) वर्ष तक राज्य किया।

(1) अतियोकस सिरीवा नरेश

अतियोकस प्रथम	–	बिन्दुसार
अतियोकस द्वितीय	–	अशोक
अतियोकस तृतीय	–	अशोक के उत्तराधिकारी – का समकालीन था।

(2) तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में – काबुल की घाटी सुआगसेन नामक राजा के अधीन थी। इसके काल में अंतियोकस तृतीय भारत पर चढ़ गया और सभंग सेन से असंख्य हाथी व उपहार ले गया।

3. अभिलेखों से ज्ञात होता है कि मात्र अशोक व उसके उत्तराधिकारी दशरथ ने देवानाम्प्रिय की उपाधि धारण किया था।
4. अशोक ने अपने वंशजों को आक्रमण भूलक युद्ध न करने का आदेश दिया था।
5. राजतरंगिणी – ने धर्माचरण व दान व परोपकारिता के लिए अशोक की प्रशंसा किया है।
6. पुष्यमित्र शुंग द्वारा बृहद्रथ की हत्या का वर्णन हर्ष चरित का लेखक बाण ने किया है।
7. महामात्रो के पंचवर्षीय व त्रिवर्षीय दौरे का मुख्य कारण प्रांतीय अधिकारियों के अत्याचार को रोकना था।

मौर्य कालीन दशा व व्यापार

1. द्वैराज्य— जब राजा अपने वंश के किसी राजकुमार या सरदार को शासन के काम में सहकर्मी या अधीन सहयोगी बना लेता था। तो इस प्रकार के शासन को द्वैराज्य कहा जाता थां
2. स्थानी प्रशासन, वैधानिक कार्य, ग्रामीण क्षेत्रों में न्याय संचालनों में शासन विकेन्द्रित था।
3. मौर्य नरेश — दैवीपद के लिए दावा नहीं करते थे।
4. अर्थशास्त्र में भी महामात्र व युक्त नामक अधिकारियों का उल्लेख मिलता है।
5. वैश्य व यवन भी राज्य के उच्चतम पदों पर नियुक्त किये जाते थे।
6. सेना में मुख्यतः 6 भाग थे एक एक भाग का 5—5 सदस्यों वाली 6 समितियां करती थी। नौ सेना, यातायात और सदविभाग, पदातिसेना, अश्वसेना, रथ सेना व गजसेना।
7. भाग— भूमिकर को भाग कहलाता था। उपज का साधारणतः 1/6 भाग था, लेकिन विशेष परिस्थिति में यह उपज का 1/4 से 1/5 तक हो जाता था।
8. ग्रीक लेखकों के अनुसार — सम्पूर्ण भारत राजा की सम्पत्ति है और कोई भी व्यक्ति भूमि को अपना समझकर नहीं रख सकता ।
9. भूमि की नाप भी की जाती थी।
10. बलि, सम्भवजः, भूमि पर अतिरिक्त कर था।

आयकर—

1. व्यापार कर, बेगार कर, जन्म व मृत्यु कर, अर्थ दण्ड, विक्रय कर, चरागाह कर आदि।
2. सुदर्शन झील— कठियावाड़ में है।
3. चन्द्र गुप्त ने दूरी निर्देशक पत्थरों के साथ राज पंथो का निर्माण करवाया था। अशोक ने इन पर छापादार वृक्ष तथा कुएं खुदवाया था।
4. राजा की उपाधि सामंद पद व अधीनता की सूचक थी।
5. अशोक के समय में राजाओं को अपेन क्षेत्र में स्वायत्त शासन करने का अधीकार था।
6. प्रयण— विशेष आवश्यकता पड़ने पर जनता राज्य को प्रीतिकर देती थी। जिसे प्रणय कहा जाता था। इसका उल्लेख शक राजा, रूद्रदामन अपने अभिलेखों में विशेष रूप से करता है।

समाज

1. चारो आश्रमों की विधिवत स्थापाना।
2. गौतमी पुत्र शतकर्णी ने चार्तुवर्ण्य की पुनः स्थापना किया था। क्योंकि यह संकटोत्पन्न हो गयी थी।
3. मौर्य युग में विवाहित स्त्रियों को अपने पति के साथ धार्मिक ग्रंथों के ज्ञान प्राप्ति की सुविधा नहीं दी गयी थी।
   यद्यपि वे अपने पति के साथ धार्मिक कार्यो में भाग अवश्य लेती थी।
4. स्त्रियों का क्रय–विक्रय होता था।

व्यापार

1. ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी 100 BC में भारत और रोम साम्राज्य के बीच सम्पर्क स्थापित हो चुका था। जबकि ई0 सन 100 AD की प्रथम शताब्दी में चीन, यूनानी जगत लंका और दूरस्थ भारत के साथ होने वाले सम्बंध का उल्लेख हमें अभिलेखो तथा साहित्य में मिलता है। मुख्यतः नागार्जुन कोडा अभिलेख मिलिन्द पन्हों में –
2. धरण या पुराण– मानव धर्म शास्त्र में 32 रानियों (58.56 ग्रेन) के चांदी के सिक्कों को धरण या पुराण कहा गया है।
3. बड़े पैमाने पर भारत की बनी मलमल का ई0 सन की प्रथम सदी में रोमन साम्राज्य को निर्यात होता था। सर्वोत्तम मलमल उस समय गंगा की तराई (Gangetic) में बनती थी। अर्थशास्त्र में उजले और कोमल दुकुल के लिए पूर्वी बंगाल व गंगा का डेल्आ प्रसिद्ध था।

धर्म

1. वैदिक देवताओं की पूजा अभी बंद नही हुई थी। सातवाहन काल तक इन्द्र और वरूण की पूजा होती थी।
2. कर्टियस लिखता है कि– पोप्स की सेना के सामने हेराम्लीज की मूर्ति लायी गयी थी। जिसका सम्बंध वासुदेव या संकर्षण से लगाया जाता है।
3. मौर्यो द्वारा शिव, स्कन्द और विशाल की मूर्तियों प्रदर्शन और विक्रय का उल्लेख पतंजलि ने किया है।
   इस युग में वैदिक यज्ञ भी प्रचुर मात्रा में सम्पादित किये जाते थे।

साहित्य

1. अर्थशास्त्र, भद्रवाहु का कल्य सूत्र और बौद्धो का कथावत्थु ये तीनों मौर्य कालीन रचना मानी जाती है।

2. मानव धर्म शास्त्र की रचना मौर्येत्तर काल में हुई।

गुप्त व गुप्तोत्तर कालीन दशा —दत्त चौधरी मजूमदार

प्रशासन—

1. संधिविग्रहिक— गुप्त काल में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण मंत्री था। यही केन्द्रीय प्रशासन का सर्वेसर्वा होता था।
2. कुमारामात्य— अधिकारियों के एक विशेष वर्ग को कुमारामात्य कहा जाता था। वे शांति और युद्ध के मंत्री, सेनानायक, सभासद, जागीरदार समझे जाते थे।
3. ओलैनायगम— चोलो (राजाओं) के समय में दक्षिण भारत में इस अधिकारी का उल्लेख मिलता है। जिसे राजा के दिये हुए प्रत्येक निर्देश की स्वीकृति देनी पड़ती थी।
4. भोट्ट विष्ट— तिब्बत की सीमा पर प्रचलित एक विशेष प्रकार की बेगार प्रथा।

धर्म

1. छठी व सातवीं शताब्दी में शैव धर्म ने उत्तरी भारत में राजकीय धर्म के रूप में वैष्णव धर्म का स्थान ग्रहण किया। मिहिर कुल, यशोधर्मन, शशांक और हर्ष जैसे शासक थे।
2. शंकराचार्य— शौवोपासक थे (जन्म केरल की सदी आठवी — 9वीं सदी)
   चारा मठो की स्थापना—

- द्वारिका— कठियावाड़
- श्रंगेरी — मैसूर
- फुटी — उड़ीसा
- बदरीनाथ— हिमाचल

शंकराचार्य द्वारा स्थापित धाम प्रसिद्ध है—

1. वासवकेन लिंगायत या वीर शैव सम्प्रदाय की एक विशेषता समाजिक सुधार के लिए इसका उत्साह और कठोर प्रथा के बंधन से स्त्रियों को मुक्त करने के लिए विशेष उत्कंठा थी।
   वासव— कल्याण के कलचुर्य के एक जैन राजा विज्जल का मंत्री था। जो 12वीं सदी के मध्यकाल में था।
2. नाथमुनि यमुनाचार्य आदि वैष्णव थे।

रामानुज ने – कांची और श्रीरंगम को अपने कार्य का प्रथम केन्द्र बनाया था। लेकिन चोलो से शत्रुता के कारण इन्हें होयसोल राजदरबार में शरण लेनी पड़ी थी।

श्रीवैष्णव – रामानुज के अनुयायी श्रीवैष्णव कहे जाते है।

3. गुप्त तथा प्रारम्भिक चालुक्य राजाओं के बाद अश्वमेघ यज्ञ का प्रचलन बंद हो गया था।

प्राचीन भारत के स्मृति चिन्ह –दत्त चौधरी मजूमदार

1. गंधार कला की मूर्तियां – काले पत्थर से बनायी गयी है।
2. 200BC से 320 AD तक का काल – मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध हैं यह भवन निर्माण कला में उतना सम्पन्न नहीं है।
3. भीतर गांव (गुप्तकाल) का मंदिर – इंटो से निर्मित है।
4. द्रविड़ कला की शुरूवात पल्लव कला से होती है। सर्वाधिक उल्लेखनीय यह है कि यही द्रविड़ शिखर शैली की जावा, कम्बोड़िया, वियत नाम के मंदिरों में पायी जाती है।
   इसकी (द्रविड़) मुख्य विशेषता – शिखर व स्तम्भ है। उत्तर भारतीय (नागर) शैली के मंदिरों में नहीं पाये जाते है।
5. चोल कलाकारों ने दैत्यों की तरह कल्वपस की और लोहरियों की तरह उसे पूर्ण किया।
6. ऐलीफैंटा (बम्बई के निकट) नामक द्वीप की गुफाएं ब्राह्मण देवताओं की मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
7. गोमतेश्वर प्रतिमा (जैन) – यह जैन मूर्ति है जिसका निर्माण होयसुक शासन काल में एक मंत्री चामुंड राय ने किया था और श्रवणगोलवेसा में स्थापित करवाया था।
8. प्राचीन भारत में कला धर्म की दासी रही है।

जैन व बौद्ध धर्म D.N. Gha (Single)

1. छः महानगर– जिनका सम्बंध गौतम बुद्ध के जीवन से था। चम्पा, विहार, राजगृह (पटना) साकेत, कौशाम्बी, बनारस, कुशीनगर।
2. गठपति – भूस्वामी– प्राचीन काल में गठपति शब्द से किसी महत्व पूर्ण यज्ञ के अवसर पर अतिथि की सेवा करने व्यक्ति और प्रमुख पाजक का बोध होता था, लेकिन बौद्ध युग में इससे ऐसे व्यक्ति का बोध होता था। जो किसी भी जाति के एक विशाल वित्त सत्तमक परिवार का मुखिया होता था, जिसे धन के कारण सम्मान मिला हो। प्राचीन बौद्ध ग्रंथो में बार–बार गठपतियां शब्द का उल्लेख मिलता था जिसके मेण्डक नामक गठपति का उल्लेख मिलता था।
3. उच्छेदवाद– (भौतिक वाद) इसके प्रवर्तक अजित केश के मलिन थे।

4. पकुघ कच्चापन – सभी तत्व नश्वर है।
5. आजीवक सम्प्रदाय – मख्खलि पुत्र गोसाक यह सुरापाल कर नग्न धूमता था और निरंकुश मौन साधना में लीन रहता था।
6. पार्श्वनाथ– सातवी सदी ईसा में थे (700 BC)
7. महात्मा बुद्ध को गया में निरंजना नदी के तट पर बढ़ वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ।
8. बुद्ध ने मांसभक्षण पर रोक नहीं लगाई थी जबकि महावीर ने लगायी थी।
9. कृषि कर्म को बुद्ध ने प्रोत्साहित किया। जैन धर्म में प्रतिबंध था।
10. बुद्ध ने समुंद्र यात्रा को स्वीकृति प्रदान की। बौद्धायन ने समुंद्र यात्रा की भर्त्सना पाप कर्म के रूप में किया है।

- ब्राह्मण ग्रंथो में– होटलों में खान पान पर प्रतिबंध था, जबकि बुद्ध ने ऐसा नहीं बल्कि होटलों को प्रोत्साहित किया।
- ब्राह्मण वादी विधि निर्माता– वेश्यावृत्ति की भर्त्सना करता है, जबकि संघ प्रवेश में वेश्या भी प्रवेश कर सकती थी।
- जैन व बौद्ध दोनो जाति व्यवस्था का निर्मूलन नहीं करना चाहते थे। दोनो ने जाति प्रथा को स्वीकार किया।
- जैन व बौद्ध भिक्षु तथा भिक्षुणी चारो वर्णो के यहाँ से भिक्षा ग्रहण तथा भोजन कर सकते थे।
- जैन व बौद्ध दोनो में कर्जदार व दास का प्रवेश वर्जित था।
- अश्पृयश्ता – का खंडन दोनों ने नहीं किया बल्कि अपनाया। क्योंकि चंडालों को अछूत माना गया है।
- यद्यपि दोनो धर्मो ने दासों की दशा को सुधारने का प्रयास अवश्य किया था।
- समवेत अध्ययन से ज्ञात होता है कि दोनो धर्मो ने समाज में प्रचलित भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास नहीं किया। अलबत्ता निर्माण के विषय में समानता अवश्य थी।

मौर्य वंश **D.N Gita (Single)**

1. तारानाथ – 16 वीं सदी में भारत यात्राा किया था। उसने लिखा है कि बिन्दुसार ने दो समुंद्रो के बीच की भमि जीत ली थी।
2. अशोक ने अपनी पुत्री का विवाह नेपाल के एक राज पुरूष से किया था।
3. अर्थशास्त्र में – गोय, स्थानिक, धर्मस्थ, नागरक, नामक अधिकारियों का उल्लेख मिलता है।
4. शाही जमीन (सीता) को अवकाश प्राप्त अधिकारियों तथा पुरोहितों को भूमि खंडके रूप में प्रदान किया जाता था। लेकिन गृहीता को भूमि बेचने, बंधक रखने अथवा दूसरे को देने का अधिकार नहीं थी।

5. पण्याध्यक्ष– (वाणिज्य अधीक्षक)– यह वस्तुओं के मूल्यों को निर्धारित करता है और जब किसी वसतु की भरमार हो जाती थी तो वह हस्तक्षेप भी करता था।
   संस्थाध्यक्ष– (बाजार अधीक्षक) – यह व्यापारियों व दुकानदारों के शोषण मिलाकर आदि से जनता की रक्षा करता था।
6. मौर्य युग में बलि, शंकर नामक दो अन्य कर थे। हिरण्य नामक का जिन्स के रूप में नहीं नकद किया जाता था।
   प्रयाग (स्नेहोपहार)– यह संकट कालीन कर था।
7. खनन व धातुक्रम पर राज्य का एकाधिकार था।
8. विष्टि बंधक – यह सरकारी अधिकारी था उनमें मजदूरों के मध्य कार्य करता था।
9. अहिताक– विशेष परिस्थितियों में उच्च वर्णो के लोगो को भी बंधक अथवा दास बनाया जा सकता था, जिसे कौटिल्य ने अथिक कहा है।
10. कौटिल्य– शुद्रा को दंडित करने का प्रावधान किया है।

1. कौटिल्य ने वैदिक जीवन पद्धति का यशोगान किया है। अर्थशास्त्र में इस बात के प्रमाण मिलते है कि मंदिरों में विभिन्न देवताओं की पूजा होती थी।
2. हेटाम्लस– इसकी पूजा मथुरा में होती थी यही देवता आगे चल कर कृष्ण के नाम को पूजा गया।
3. कौटिल्य– ने बौद्धो जैनो व आजीवकों को बृषल तथा पांषड कहा है।
4. अशोक की धम्मनीति का लक्ष्य था। लोगो में सामाजिक उत्तर दायित्व की चेतना जगाना तथा उसने मानव की गरिमा को प्रतिष्ठित करने पर अत्यधिक बल दिया।
5. अशोक के धम्म के मूल सिद्धांतों में सहिष्णुता का प्रमुख स्थान था।
6. यद्यपि अशोक ने महोत्सवों व सभाओं पर सामाजिक सहिष्णुता बनाये रखने के लिए प्रतिबंध अवश्य लगाया था।
   लेकिन उसने राजकीय सभाओं व महोत्सवों पर प्रतिबंध नहीं लगाया था।
7. अशोक धार्मिक अनुष्ठानों व यज्ञों पर भी प्रहार किया। क्योंकि पुरोहित इनका संचालन करते थे और जनता के अंधविश्वास से लाभ उठाते थे।
8. य़द्यपि अशोक ने पशुबध पर निषेध लगाया था लेकिन उसका यह राज्यादेश राज्य द्वारा संरक्षित पशु क्षेत्रों पर ही लागू था।
9. यह भी सम्भव है कि अशोक केवल यज्ञानुष्ठानों में पशुबलि की प्रथा पर रोक लगाना चाहता था और सामान्य रूप से पशुओं को मारने पर रोक लगाने की उसकी मंशा नहीं थी। क्योंकि उसने खुद कहा है कि– "शाही महल में रसोई घर में रोज दो मोर और एक हिरण मारा जायेगा।"

1. यज्ञिक अनुष्ठानों में पशु बलि पर रोक लगाने के वावजूद अशोक पूरी तरह हिंसा का त्याग नहीं किया क्योंकि जंगली जातियों के विरूद्ध व बल प्रयोग व हिंसा के प्रयोग की धमकी देता है।

2. अशोक के धम्म महामात्र, धम्म नीति को लागू करवाते थे, साथ–साथ अन्य सरकारी पदाधिकारियों व राजकीय कोषो को भी नियंत्रित करते थे।
3. अब तक अशोक के 14 राज्या देश प्राप्त हो चुके है।
4. अशोक के समय में तक्षशिला में पुनः विद्रोह हुआ था, जिसकों दबाने के लिए कुणाल को भेजा गया था।
5. अशोक के बाद साम्राज्य दो भागों में बंट गया। पश्चिमी व पूर्वी पश्चिमी भाग पर कुणाल ने शासन किया।
6. मौर्य साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण आर्थिक था। – BY D.N Gha

मौर्योत्तर काल

1. मथुरा के सहका नामक विशेष वस्तु का उल्लेख पतंजलि ने किया है।
2. महायान – मध्य एशिया, तिब्बत, चीन, जापान, हीनयान, श्रीलंका, बर्मा, दक्षिण पूर्व एशिया।
3. लिंग पूजा – हिन्दूओं ने प्रथम सदी में इसका पालन किया।
4. गीता रचना काल– क्षेपक 200 ठब्
5. अश्वघोष – संस्कृत का प्रथम नाटकार माना जाता है। लेकिन सबसे पुराना सम्पुर्ण नाटक वानवासवटता भाग लिखा, जिसका पता 1912 में केरल में लगा।
6. सातवाहनों ने भी प्राकृत भाषा को अपनाया था।

....

गुप्त काल व गुप्तोत्तर काल – D.N Gha

1. कृषि दास प्रथा– इसका तात्पर्य है कि – कृषिभोगियों ग्रहीता को जमीन दे देने के बाद किसान उनकी जमीन से जुड़े रहते थे। यह प्रथा सर्व प्रथम दक्षिण भारत में शुरू हुई थी, जिनका सर्वप्रथम उल्लेख पल्लव अभिलेख में मिलता है।
2. भारतीय रोमन व्यापार में – रेशम व मसाले प्रमुख थे।
3. मंदिरों में वेश्याओं के रहने का सबसे पुराना साक्ष्य सम्भवतः अशोक के कुछ ही दिनों बाद बनारस से 160 मीन दक्षिण रामगढ़ में उत्कीर्ण किये गये गुफा अभिलेख से मिलता है।
4. इस काल में महिलाओं को शिक्षा के अधिकार से बंधित कर दिया गया। बालविवाद व सती प्रथा को धर्माह पक्षों ने मान्यता प्रदान किया।
5. शेव व बौद्ध धर्म में भी अवतार वाद व भक्ति की कल्पना की गयी है। बौद्धों में मैत्रेय अवतार लेगे। शैव धर्म में 20 अवतार माने गये है।
6. लक्ष्मी व विष्णु का पति पत्नी के रूप में सर्वप्रथम उल्लेख स्कन्द गुप्त के एक अभिलेख में मिलता है।
7. पार्वती व शिव के विवाह का उल्लेख कुमार गुप्त के अभिलेख में मिलता है।
8. गुप्तकाल में वैष्णव धर्म की भांति शैव धर्म को भी राजकीय संरक्षण प्रदान किया गया।

   नचना कुठारा मंदिर व नागोद का मंदिर मध्य प्रदेश में दोनो शैव मंदिर थे।
9. गुप्त काल में– नागार्जुन, असंग, आर्य वेद, बलुबंधा, दिनांक, आदि महायान शाखा के आश्चार्य थे।

   महायानी वेधिसत्व मूर्तिपूजा भक्ति पर जोर देते थे। इसी महयान शाखा से वज्रयान का विकास हुआ था।

1. वात्स्थापन – चौथी सदी – ये न्यायदशर्पन से सम्बंधित थे।

   प्रशस्त – काख्यान – वैश्ये शकदर्शन – (भौतिक वाद)

   ई खटकृष्ण – कख्याता – सांख्य,

   व्यास – योग

   शवरस्वामी –मीमंसा – इस दर्शन को द्वारा वेदों को पुत्र प्रतिष्ठत करने का प्रयास किया गया।

   वादरायण, मा।णपाद – वेदान्त या उत्तर मीमांसा।
2. गुप्त कालीन चित्रकला का अवशेष– बाघ की गुफाओं (गुफा) अजंता की गुफा (16,17,21,–1–2) एवं बादमी की गुफा (टाफा 3) में मिलता है।
3. पंच सिद्धांति का वराहमिहिर (खगोलविज्ञान) पंचाग विज्ञान वराह मिहिर